वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विष्णु पुराण में निर्दिष्ट अतिथि सत्कार विषयक वर्णन की प्रासंगिकता

संतोष कुमार पाण्डेय

शोध छात्र,
प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जौनपुर (उ0प्र0)
सम्बद्ध : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश :–
अतिथि का शाब्दिक अर्थ है– जिसके आने की कोई तिथि न हो। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में इसे भगवान का दर्जा दिया गया, इसमें कई अन्य देवताओं का वास बताया गया। विष्णु पुराण में गृहस्थ का कर्त्तव्य बताने के प्रसंग में अतिथि सत्कार सम्बन्धी वर्णन कई स्थानों पर प्राप्त होते है। अतिथि सत्कार का आध्यात्मिक महत्व था क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति के पाप नष्ट हो जाते थे तथा वह प्रगति पथ पर अग्रसर हो जाता था। वर्तमान समय में जहाँ लोगों में वैयक्तिकता, स्वार्थपरकता की भावना बढ़ती जा रही है, ऐसे में विष्णु पुराण में वर्णित अतिथि सत्कार की व्यवस्था को चिन्तन कर उसे व्यवहारिक जीवन में आत्मसात कर लेने की नितान्त आवश्यकता है। विष्णु पुराण में अतिथि सत्कार का अत्यधिक प्रेरणास्पद वर्णन प्राप्त होता है। इस शोधपत्र में उसी के वर्णन तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता पर विचार किया गया है।

भारतीय वाङ्मय में पौराणिक साहित्य को एक विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पुराण भारतीय साहित्य, जीवन शैली के रत्नजड़ित आभूषण तथा अमूल्य धरोहर हैं। यह अतीत को वर्तमान से जोड़ने वाली कड़ी के रूप में हैं। पुराण हमारे समक्ष प्राचीन भारत के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन का सुन्दर चित्रण अत्यन्त सरल, सहज व सुग्राह्य शैली में प्रस्तुत करते हैं। इसमें केवल धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे पुरुषार्थों के दर्शन नहीं होते हैं[1] बल्कि जीवन के विविध पक्षों का भी वर्णन प्राप्त हो जाता है। यदि कोई भारतीय संस्कृति की प्राचीनता, उपयोगिता को सम्यक रूप से जानना चाहता है तो पुराण से अधिक सहयोगी अवयव कोई दूसरा हो ही नहीं सकता है।
पुराणों की संख्या मुख्य रूप से 18 है।[2] इन अष्टादश पुराणों में विष्णु पुराण, वैष्णव धर्म का मुख्य ग्रन्थ है, इसके आराध्य देव विष्णु हैं जिनको इस पुराण में सर्वेश कहकर सम्बोधित किया गया है तथा उनको सभी जीवों का आश्रय स्थल बताया गया है।[3] शतपथ ब्राह्मण में भी भगवान विष्णु को सर्वश्रेष्ठ देवता कहा गया है।[4] विष्णुपुराण में मुख्य रूप से श्री कृष्ण का चरित्र वर्णित है यद्यपि कि संक्षिप्त रूप से भगवान श्री राम की कथा भी प्राप्त होती है।[5] पराशर ऋषि द्वारा लिखित 23,000 श्लोकों वाला यह पुराण सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, भौगोलिक, ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड की दृष्टि से अत्यधिक महत्व का है।
विष्णु पुराण में गृहस्थ का कर्तव्य बताने के प्रसंग में अतिथि सत्कार का वर्णन करते हुए बताया गया है, ''कि अतिथि जिस घर में भी आए वह सन्तुष्ट होकर ही वापस लौटे यदि अतिथि किसी घर से असन्तुष्ट होकर वापस लौट जाता है तो उस घर के व्यक्तियों के समस्त पुण्य कर्म को हर ले जाता है। गृहस्थ व्यक्ति को घर में उपलब्ध संसाधनों के अनुसार ही अतिथि का स्वागत करना चाहिए तथा अतिथि को भी जिस घर में वह जाए उस व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के अनुसार ही सत्कार की आशा करनी चाहिए।''[6] ''गृहस्थ व्यक्ति के लिए अतिथि के प्रति अहंकार, अपमान, दम्भ का आचरण अनुचित है।''[7] अर्थात् अतिथि के प्रति मन में बहुत ही सम्मानजनक भाव होना चाहिए। ''विष्णु पुराण में देवता, ब्राह्मण, भिक्षुगण को अतिथि बताया गया जिनका पूजन करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।''[8] जिस प्रकार हम जानबूझकर या गलती से हुए पापकर्म के प्रायश्चित के लिए किसी देवी–देवता की आराधना/धार्मिक अनुष्ठान करते हैं ताकि हमारे पाप कर्म का प्रभाव या तो कम हो जाए अथवा समाप्त हो जाए, ठीक उसी प्रकार अतिथि स्वरूप देवता को सन्तुष्ट करके जहाँ पर हम सभी पापकर्मों से मुक्ति पा सकते हैं वहीं असन्तुष्ट करने पर हम पाप के भागीदार भी बनते हैं। ''अतिथि की सेवा अत्यन्त कल्याणकारी था, कई प्रमुख देवता जैसे धाता, प्रजापति, इन्द्र, अग्नि, वसुगण, अर्यमा आदि घर आने वाले अतिथि में प्रवृष्ट होकर भोजन ग्रहण करते हैं।''[9] ऋग्वेद[10], मनुस्मृति[11], श्रीमद्भागवत्[12], विष्णु पुराण[13] में यह वर्णन मिलता है कि 'जो पुरुष बिना अतिथि के भोजन करता है, वह पाप का भागीदार होता है अतः प्रत्येक मनुष्य को सदैव अतिथि पूजा के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। प्रत्येक गृहस्थ

व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपने भोजन के साथ कुछ अतिरिक्त भी बनाए जिसे घर आए अतिथि को खिलाया जा सके।' बुद्धिमान पुरुष भोजन करते समय भी घर आए अतिथि का अपने सामर्थ्य के अनुसार स्वागत करता है। अतिथि सत्कार की विधि बताते हुए कहा गया कि, ''सर्वप्रथम पैर धुलना चाहिए, फिर आसन देना चाहिए, इसके बाद स्वागत सूचक शब्दों के साथ भोजन कराकर विश्राम की व्यवस्था करनी चाहिए।''[14] विष्णु पुराण के अनुसार, ''घर आए अतिथि को अपनी सामर्थ्य के अनुसार भोजन के लिए अन्न, शाक, पानी देकर तथा विश्राम के लिए घास–फूस का विस्तर यदि वह भी संभव न हो तो पृथ्वी पर लेटाकर उसका स्वागत करना चाहिए।''[15] महाभारत के अनुसार घर में यदि कुछ न उपस्थित हो तो कुशों का आसन, शीतल जल, मधुर वाणी, बैठाने के लिए स्थान इन चार वस्तुएँ जो आसानी से तथा प्रत्येक घर में मिल जाती हैं, से ही सत्कार करना चाहिए।[16] अर्थात् घर में उपलब्ध संसाधनों के अनुसार, प्रेमपूर्वक अतिथि का सत्कार करना चाहिए इसके पीछे यही भावना रही होगी कि यदि व्यक्ति सामर्थ्य से अधिक बाहर जाकर अतिथि सत्कार करेगा तो उस पर अनावश्यक बोझ बढ़ेगा। विष्णु पुराण से ज्ञात होता है कि, ''अतिथि को बिना सत्कार किए वापस कर देने पर पाप पुण्य की मात्रा भी समय के अनुसार घटती या बढ़ती रहती थी। दिन के समय यदि अतिथि वापस लौटता था तो जितना पाप लगता था, उससे आठ गुना अधिक पाप सूर्यास्त के समय लौटने पर लगता था।''[17] सूर्यास्त के समय ''आए हुए अतिथि का स्वागत करने पर समस्त देवताओं के पूजन के बराबर पुण्य मिलता था।''[18] भारतीय संस्कृति में अतिथि को भगवान का स्थान दिया गया। गृहस्थ जीवन में सम्पन्न किए जाने वाले पंचमहायज्ञों (ब्रह्म यज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथि यज्ञ) में नृयज्ञ ''अतिथि यज्ञ का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी यज्ञ के द्वारा घर आए हुए अतिथि का सत्कार कर उन्हें अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन कराकर उन्हें सन्तुष्ट किया जाता था।''[19] जिस प्रकार देवी–देवताओं की पूजा करते समय उपलब्ध सामग्री पर नहीं बल्कि श्रद्धा पर ध्यान रखा जाता है, ठीक उसी प्रकार अतिथि सत्कार में अपने सामर्थ्य के अनुसार घर में उपलब्ध सामान का प्रयोग कर उसे सन्तुष्ट किया जा सकता है। ''अतिथि से भी यही आशा की गई कि वह किसी गृहस्थ के घर कम से कम दिन रूके तथा उसकी स्थिति के अनुसार ही सत्कार की भी इच्छा रखे इसी कारण मनुस्मृति में एक रात रूकने वाले को ही अतिथि की संज्ञा दी गई।''[20]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार विष्णुपुराण में कई स्थानों पर अतिथि सत्कार विषयक वर्णन प्राप्त होता है। अतिथि का सत्कार करना प्रत्येक गृहस्थ का परमकर्तव्य था। यह अत्यन्त पुण्य व सौभाग्य का कार्य था इसी कारण इसे पंचमहायज्ञों में स्थान मिला। घर में अतिथि अकेला ही नहीं आता है, बल्कि कई प्रमुख देवता अतिथि में प्रविष्ट होकर ही भोजन प्राप्त करते हैं इसी कारण अतिथि का आदर–सत्कार किए बिना वापस कर देना पाप माना गया। घर आए अतिथि को वापस कर देने पर लगने वाली पाप की मात्रा भी समय के अनुसार घटती–बढ़ती रहती थी, यह सूर्योदय के समय अपेक्षाकृत कम जबकि सूर्यास्त के बाद सर्वाधिक थी। व्यक्ति को घर में उपलब्ध संसाधनों के अनुसार ही अतिथि का सत्कार करना चाहिए तथा अतिथि को भी व्यक्ति की स्थिति के अनुसार ही सत्कार की इच्छा रखनी चाहिए ताकि व्यक्ति पर अनावश्यक बोझ न बढ़े।

वर्तमान समय में आधुनिक बनने की अन्धी दौड़ के कारण भारतीय संस्कृति विलुप्त होने की दिशा में अग्रसर है। अब पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से एकाकी परिवार अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। लोगों में व्यक्तिवाद की भावना का तेजी से प्रसार हो रहा है, वे स्वार्थी, एकांकी होते जा रहे हैं। आज के युवा पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के लोगों के साथ सामन्जस्य बैठाने में कठिनाई होती है। प्राचीन काल से ही भारत में अतिथि को देवता मानकर उसे पूजा गया यथा–संभव उसका आदर–सत्कार किया गया। अब बढ़ती हुई महंगाई, समय का अभाव, एकांकी प्रवृत्ति, व्यक्तिवाद, यातायात तथा संचार के साधनों के विकास के कारण लोग सोचते हैं कि या तो कोई अतिथि न आए या फिर अत्यन्त कम समय के लिए आए, फिर चाय–नाश्ता करके वापस भी लौट जाए। कई बार बच्चों की पढ़ाई में बाधा तथा अन्य समस्याओं के बहाने उनको मना भी कर दिया जाता है। बच्चे अपने माता–पिता का ही अनुकरण करते हैं, इसी परिवेश में उनका पालन–पोषण होता है, वे भी एकांकी होते जाते हैं तथा एक समय के बाद उनके वृद्ध माता–पिता भी उनके लिए बोझस्वरूप हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। यहाँ पर प्राचीन काल से ही अनेक विदेशी यात्री अतिथि स्वरूप आते तथा अत्यन्त सम्मान पाते रहे हैं परन्तु अब लोगों में नैतिक तथा चारित्रिक पतन के कारण प्रतिदिन चोरी, डकैती, लूट, हत्या की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति उदासीनता के कारण उनको इस बात की जानकारी ही नहीं हो पाती है कि हमारे प्राचीन गौरव ग्रन्थों में अतिथि को अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखा गया उनको देवता मानकर आदर–सत्कार किया गया। उस समय लोगों का नैतिक तथा चारित्रिक स्तर अत्यन्त उन्नत था जिस कारण भारत को विश्व में सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ था।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विष्णु पुराण में अतिथि सत्कार विषयक जो सारगर्भित वर्णन प्राप्त होता है, आज कि युवा पीढ़ी को उसका अध्ययन, चिन्तन, मनन कर उसे अवश्य अपनाना चाहिए। ऐसी उत्कृष्ट भावना को अपना लेने से हम अतिथियों के प्रति होने वाले नियमित तथा अनियमित अपराध से बच सकेंगे, इहलोक तथा परलोक को सुधारने के

साथ–साथ पुण्य कर्म भी प्राप्त कर सकेंगे। भारतीय संस्कृति को अतिथि सत्कार की दिशा में आगे ले जाने तथा विश्व में पुनः सम्मानित स्थान दिलाने में हम अपना सहयोग भी दे सकेंगे।
निश्चित तौर पर हम कह सकते हैं कि विष्णुपुराण में उल्लिखित अतिथि सत्कार विषयक वर्णन प्राचीन काल में भी प्रासंगिक था, आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी प्रासंगिक ही रहेगा।

सन्दर्भ सूची–

1. विष्णुपुराण, वैंकटेश्वर प्रेस बम्बई श्री धरी टीका से उद्धृत।
2. मार्कण्डेय पुराण 137/7–11, वायु पुराण 104/2–10
मत्स्य पुराण 3/6/21–24, भागवत पुराण 13/13–4–8
मत्स्य पुराण 53/11–56
3. सर्वेश सर्वभूतात्मन्सर्वं सर्वाश्रच्युत, प्रसीद विष्णो.... विष्णु पुराण 1/9/57
4. शतपथ ब्राह्मण 14/1/1/5
5. विष्णु पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर, तृतीय अंश।
6. अतिथिर्यस्य भग्नांशो गृहात्प्रतिनिवर्तते।
स दत्वा दुष्कृतं तस्मै पुण्यामादाय गच्छति।।
विष्णु पुराण 9/15 (तृतीय अंश), गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. अवज्ञानंमहकारो दम्भश्चैव गृहे सतः।
परितापोपघातौ च पारूष्यं च न शस्यते।।
विष्णु पुराण 9/16 (गीताप्रेस, गोरखपुर), तृतीय अंश।
8. इंत्येतेऽतिथयः प्रोक्तः प्रागुक्ता भिक्षवश्चये।
चतुरः पूजयित्वैतान्नृपः पापात्प्रमुच्यते।। विष्णु पु0 11/67
9. धाता प्रजापतिः शक्रो वह्निवसुर्गणोऽर्यमा।
प्रविश्यातिथिमेते वै भुञजन्तेऽन्नं नरेश्वर।। विष्णु पुराण 11/69
10. केवलाघो भवति केवलादी– ऋग्वेद 10/117/6
11. अघं स केवलं भुड.क्तेयः पचन्त्यात्मकारणात्– मनुस्मृति 3/118
12. भुञ्जते ते त्वधं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् –श्रीमद्भागवत 3/13
13. तस्मादतिथिपूजाय यतेत सततं नरः।
स केवलमघं भुड्.क्ते ह्यतिथिं बिना।। विष्णु पु0 11/70
14. अतिथिं चागतं तत्र सशक्त्या पूजयेद्बुधः।
पादशौचासन प्रह्वस्वागतोक्त्या च पूजनम्।।
ततश्चान्नप्रदानेन शयनेन च पार्थिव।। विष्णु पुराण 11/107
15. अन्नशाकाम्बुदानेन स्वशक्त्या पूजयेत्पुमान्।
शयनप्रस्तरमहीप्रदानैरथवापि तम्।। विष्णु पुराण 12/33
16. तृणानि भूमिरूदकं वाक् चतुर्थ्थी च सुनृतां।
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन।। महाभारत (उद्योगपर्व) 36/34
17. दिवातिथौ विमुखे गते यत्पातकं नृपः।
तदेवाष्टगुणं पुसस्सूर्योदे विमुखेगता।। विष्णु पुराण 11/108
18. तस्मात्स्वशक्त्या राजेन्द्र सूर्योढ़मतिथिं नरः।
पूजयेत्पूजिते तस्मिन्पूजितासर्वदेवताः।। विष्णु पुराण 11/109
19. द्विवेदी, शिवबालक, भारतीय संस्कृति, पृ0 30
20. एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः।
अनित्यं हि स्थितौ यस्मात्तस्मादतिथिरूच्यते।। मनु स्मृति 3/102